Bodhi-Path Year 2021 January Issue Volume 20 Page No 17-22

महाबोधि संघाराम का संक्षिप्त परिचय

डॉ0 कामेश्वर प्रसाद
Ex- प्रोजेक्ट डायरेक्टर
ICSSR New Delhi
नव नालन्दा महाविहार
मानित विश्वविद्यालय, नालन्दा
बिहार (भारत)

पहाडों एवं जंगलों से घिरी नेपाल की तराई में जिस सम्राट अशोक ने गौतम बुद्ध के पूर्ववर्ती का नागमण का स्तूप स्थापित किया, वह बोधगया को कैसे भूल सकता था। उसने बोधगया की यात्रा की पर अपने शिलालेख में उसने यहाँ स्तंम्भ खड़ा करने अथवा चैत्य बनाने का उल्लेख नहीं किया है। पीछे जब वह बुद्ध की जन्मभूमि लुंबिनी गया, तब उसने वहाँ शिलालेख स्तंभ खड़ा किया। इस आधार पर प्रो0 ''डी0 के बरूआ'' का विचार है कि ''अशोक ने बोधगया में कोई चैत्य या वेष्टन–वेदिका नहीं बनवायी थी।'' पर यह बात समझ में नहीं आती कि जब अशोक ने अन्य तीर्थ स्थानों में स्मारक बनवाये तब वह बोधगया को क्यों भूल गया। ऐसा अनुमान होता है कि अपने पहले तीर्थाटन में वह बोधगया गया था और उसने यहाँ के लिए कोई योजना नहीं बनायी थी जिसको पीछे कार्यान्वित किया गया। वह फिर कभी बोधगया नहीं आया इसलिए इसका उल्लेख किसी स्तंभ पर नहीं मिलता। ''दिव्यावदान'' में स्पष्ट है कि सम्राट अशोक की तीर्थ यात्राओं में लुंबिनी, बोधगया, सारनाथ और कुशीनगर सम्मिलित थे। उपर्युक्त सभी स्थानों में अशोक ने स्मारक, मंदिर बनवाये। चीनी यात्री ह्वेनसांग के अनुसार सम्राट अशोक ने बोधिवृक्ष के चारों ओर दस फुट पत्थर का घेरा बनवाया था जिसे ह्वेनसांग ने स्वयं देखा था। ''ललित विस्तर'' में कहा गया है कि बोधगया के मंदिर की पवित्र भूमि की पवित्रता उपगुप्त ने अशोक को बतायी थी और अशोक ने एक लाख मुद्राएं इस स्थान पर स्मारक बनाने के लिए दी थी।

प्राचीन बर्मी अभिलेख भी सम्राट अशोक के बनवाये प्रथम बोधगया मंदिर का उल्लेख करते है।

सम्राट अशोक ने बोधगया में स्तूप के स्थान पर प्रथम मंदिर बनवाया था। भरहूत की रेलिंग पर खुदे दो दृश्यों से इस धारणा को और भी बल मिलता है। विद्वानों का यह मानना है कि भरहूत स्तूप द्वितीय शती ई0 पू0 का है। इसलिए इससे बोधिवृक्ष के मंदिर का दृश्य अशोक के बनवाये मंदिर का सच्चा चित्र है, इससे बोधिवृक्ष के मंदिर का निर्माण सम्राट अशोक ने ही करवाया था यह प्रमाणित होता है। भरहूत स्तूप की रेलिंग पर दो चित्र अंकित हैं, एक वज्रासन मंदिर का और दूसरा चंक्रमण मंदिर का। बौद्ध साहित्य से पता चलता है कि बुद्ध ज्ञान प्राप्ति के बाद कुछ दूर तक टहलते रहे। इस परिचालन पर स्मारक मंदिर बना जिसमें बुद्ध के चरणों को कमल के रूप में चित्रित कर पूजा होती थी, वज्रासन पर बैठकर बोधिवृक्ष के नीचे बुद्ध को ज्ञान की प्राप्ति हुयी थी। भरहूत रेलिंग पर वज्रासन मंदिर का जो चित्र अंकित है उसमें सम्राट अशोक द्वारा निर्मित हस्तिशिर–युक्त उल्टे कमल के आकार वाली शिरा से सुशोभित, गोलाकार स्तंभ भी है। वज्रासन मंदिर चार स्तंभों पर टिका है, उसके ऊपर बोधिवृक्ष छाया कर रहा है। नुकीले मेहराब पर आधारित छत को छेदकर वृक्ष का ऊपरी भाग ऊपर निकल आया है। कोठे की बालकनी भी साफ दिखायी देती है। वज्रासन मंदिर घेरे से आवृत्त है जिसका रूप सामान्य घेरों से भिन्न नहीं है। कनिंघम ने बोधगया के मंदिर की खुदायी में लाल बलुआ पत्थर का बना एक अत्यंत ही कांतिमय आसन पाया था, जिसे सम्राट अशोक का बनवाया वज्रासन माना है। इसके सामने चार छोटे चमकीले स्तंभ भी मिले। कनिंघम ने इसे भरहूत में चित्रित दृश्य का नमूना माना है। उनका विचार है कि बलुआ पत्थर का बना घेरा भी अशोक के ही समय का है। सम्राट अशोक के बनवाये घेरे के अवशेष शायद अब नहीं रह गये थे, साथ ही यह भी

हो सकता है कि जब ई0 पू0 द्वितीय सदी में बोधगया में व्रजासन मंदिर के मरम्मत की आवश्यकता हुयी, जिसका उदाहरण बाद में भी मिलता है तब घेरा बढ़ाने की भी जरूरत समझी गयी तथा आर्या करंगी ने इस पुण्य कार्य को अपना और अपने पति का नाम घेरे पर अंकित कराकर सम्पन्न किया। बलुआ पत्थर की रेलिंग के कुछ भाग अशोक के समय के हो सकते है।

शुंग युग में बोधगया मंदिर की रेलिंग और उस पर उत्कीर्ण शिल्प कला के नमुने प्रमुख हैं। बलुआ पत्थर के बने घेरे पर उत्कीर्ण अभिलेखों से पता चलता है कि आर्या कुरंगी (राजा इन्द्राग्निमित्र की पत्नी) और नाग देवा (राजा ब्रह्मामित्र की रानी) ने घेरे के निर्माण में योगदान दिया था। इन्द्राग्निमित्र और बह्मामित्र का समय ईसा से पहली शदी पूर्व माना गया है। अभिलेखों की लिपि, शैली भी इसी समय की मालूम होती है। विद्वानों का निर्णय है कि बोधगया मंदिर की रेलिंग पर उत्कीर्ण दृश्य भरहूत के बाद के हैं पर सांची से पहले के हैं, इसलिये बोधगया की रेलिंग के अधिकतर भाग प्रथम सदी के पूर्वार्द्ध में बनाये गये होंगे। रेलिंग की रचना भरहूत और सांची के रेलिंग के समान ही है। खड़े स्तंभों में तीन समानान्तर सूचियाँ बनाई गयीं थीं और इन पर पूर्ण कमल या अर्द्धकमल के रूढ़ात्मक चित्र उत्कीर्ण किये गये थे। स्तंभों के ऊपर उण्णीष थे। स्तंभों पर जातक दृश्य या यक्ष–यक्षिणियों की मूर्तियाँ उत्कीर्ण की गयी है। अभिलेखों से यह भी पता चलता है कि आर्या कुरंगी ने बौद्ध भिक्षु और भिक्षुणियों के लिये विहार भी बनवाये थे। फाह्यान ने इन विहारों को देखा था। ईटों से बने ये विहार अत्यंत आरामदायक थे। बोधगया मंदिर के समीप के टीलों के नीचे ही इन विहारों के अवशेष पाये जा सकते हैं। इन टीलों की थोड़ी खुदाई से ही यह अनुमान सिद्ध हो गया था।

कनिंघम के विचार में वर्तमान बोधगया मंदिर और उसका शिखर कुषाण काल का है। वज्रासन के समीप ही कुषाण सम्राट हुविष्क का एक

सिक्का मिला था। फाह्यान ने यह भी लिखा है कि उसके समय में बुद्ध के जन्म स्थान बोधिवृक्ष, मृगवन, सारनाथ और कुशीनगर में मंदिर खड़े थे। पर इससे यह निष्कर्ष नहीं निकलता कि आधुनिक शिखर युक्त मंदिर ही खड़ा था, क्योंकि इतने सुन्दर और ऊँचे शिखर वाले मंदिर का उल्लेख फाह्यान विशेष रूप से करता और उनकी आकृति का वर्णन भी करता, जैसा कि ह्वेनसांग ने किया है। इस संबंध में कुम्हरार की खुदायी में प्राप्त मिट्टी के चौखटे पर बोधगया मंदिर का चित्र उल्लेखनीय है। यह स्मृति चिन्ह कुम्हरार में सतह से डेढ़ फीट नीचे मिला और इसी के साढ़े चार फीट नीचे कुषाण काल के तांबे के सिक्के मिले। स्पूनर के मत से यह स्मृति चिन्ह दूसरी या तीसरी सदी का है। इसके एक तरफ चौमहले वाला मंदिर है और प्रधान गर्भगृह के ऊपर मूर्तियाँ बैठाने के ताखे या आले बने है। मंदिर के सबसे ऊँचे भाग पर हर्मिका युक्त स्तूपों के चित्र बने हैं। गर्भगृह के सामने मेहराबदार द्वार है और मंदिर में आसन पर बैठे मुद्रा में बुद्ध की मूर्ति है। यह मंदिर कुषाण काल में बना, इसका कोई ठोस प्रमाण नहीं मिलता है, किन्तु यहाँ से प्राप्त इंडो–सिथियन और गुप्त अभिलेख भी मंदिर के निर्माण को राजा हुविष्क के शासन काल का बताते है।

गुप्तकालीन स्थापत्य के प्रमुख उदाहरणों में बोधगया के मंदिर का प्रधान स्थान है। यद्यपि गुप्तकाल में बिहार प्रदेश में अनेक बौद्ध विहार, मंदिर तथा राजभवन बने, पर प्रायः सभी नष्ट हो गये। बोधगया के मंदिर के समीप ही समुद्रगुप्त के समय में लंका के राजा मेघवर्मा ने विशाल विहार बनवाया था। फाह्यान और युवानं–च्वांग (ह्वेनसांग) ने इस विहार को देखा था। ह्वेनसांग ने मंदिर की चहारदीवारी से अलग ''महाबोधि–संघाराम'' का वर्णन किया है। इसमें छः विशाल हॉल थे और तीन महल वाली वेधशाला की मीनारे थीं। यह संघाराम तीस या चालीस फीट ऊँची दीवार से घिरा था और इसी अहाते में लंका के राजा का बनवाया हुआ विहार था। ह्वेनसांग के अनुसार श्रीलंका के

राजा मेघवर्मा ने गुप्तवंश के राजा समुद्रगुप्त (335–76 ईस्वीं) के पास श्रीलंका के भिक्षुओं व तीर्थयात्रियों को ठहरने के लिये एक विहार बनवाने की आज्ञा लेने के लिये एक पत्र भेजा था जिसे समुद्रगुप्त ने स्वीकार कर लिया था।

पाल वंशीय राजाओं के लंबे शासन काल में यह बौद्ध तीर्थ स्थल खूब फला–फूला। यहाँ से प्राप्त कुछ अभिलेख, जो यहाँ दी गयी भेटों का वर्णन करते हैं, अधिकांशतः इस वंश के राजाओं के राज्यपाल के ही है। 1010 ईस्वी में स्वयं महाराज महीपाल ने यहाँ कुछ मरम्मत का काम कराया था। महाबोधि मंदिर तथा यहाँ विहार के भीतर और आस–पास प्राप्त होने वाली अधिकतर मूर्तियाँ इसी काल से संबंधित हैं। इनमें सबसे प्रसिद्ध, बोधिवृक्ष को नीचे भूमि स्पर्श मुद्रा में बैठे हुये बुद्ध की प्रतिमा है। इसी काल की निर्मित वज्रयान सहित बुद्ध व अन्य देवताओं की प्रतिभाएं भी यहाँ पर्याप्त मात्रा में मिलती है।

तेरहवीं शताब्दी ईस्वी के उत्तरार्ध के आस–पास बर्मा के श्रद्धावान बौद्धों ने इस महाबोधि मंदिर के रख–रखाव व उन्नति के कार्य में रूचि ली। यहाँ से प्राप्त बर्मी लिपि के अभिलेखों से कम से कम तीन बार इसकी मरम्मत कराये जाने और इसके लिये दान दिये जाने का पता चलता है। इनमें से एक अभिलेख का अत्यंत महत्व है। यह तेरहवीं शताब्दी के अंतिम दशक में बर्मा के राजा द्वारा अपने दूतों के माध्यम से इस महाविहार की पूर्ण मरम्मत कराये जाने का वर्णन करने के साथ ही साथ सम्राट अशोक के समय के इसके तीसरे पुनरूद्धार तक के इतिहास का वर्णन प्रस्तुत करता है। चौदहवीं शताब्दी में भी मुसलमानों द्वारा उत्तरी भारत को जीत लिये आने के काफी समय बाद तक बोधगया के प्रयोग में होने का पता तीर्थयात्रियों द्वारा पथ फलकों पर अंकित कराये गये वर्णन से पता चलता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. इन युवांग च्वांग, वाल्युम–2, पृ0 113
2. कनिंघम, महाबोधि आर0 दि ग्रेट बुद्धिस्ट टेम्पुल अण्डर दि बोधि ट्री ऐट बोधगया, इण्डोलॉजिकल बुक हाउस वाराणसी, 1892, पृ0 16
3. बी0 एम0 बरुआ, गया एण्ड बोधगया, कोलकत्ता, 1934, पृ0 116
4. एम0 एम0 नागर, बौद्ध महातीर्थ, लखनऊ, 1953, पृ0 7
5. पी0 सी0 राय चौधरी, बिहार डिस्ट्रिक्ट गजेटियर गया, 1957, पृ0 3–4
6. कनिंघम 1892, पृ0 8
7. कनिंघम 1892, पृ0 8
8. कनिंघम महाबोधि, पृ0 12
9. डी0 के0 बरूआ, बोधगया, टेम्पुल बिहार, पृ0 21
10. बी0 एम0 बरूआ, गया एण्ड बोधगया, पृ0 170
11. कनिंघम, महाबोधि पृ0 7
12. जनरल ऑफ बिहार एण्ड उड़ीसा रिसर्च सोसाइटी इण्डिया
13. ह्वेनसांग, अनु0 वाटर्स, खण्ड–1, पृ0 111
14. बी0 एम0 बरूआ, गया एण्ड बोधगया, भाग–1, पृ0 178
15. वी, ऊपर–1, पृ0 178
16. एम0 एम0 नागर, बौद्ध महातीर्थ, पृ0 22
17. शांति स्वरूप बौद्ध, बोधगया, सम्यक् प्रकाशन, नयी दिल्ली 2004, पृ0 37,38